

नौवीं अंक

जनवरी-मार्च 2017

ISSN- 2395-2873

साहचर

(साहित्य, सिनेमा, कला एवं अनुवाद की शोध ई-पत्रिका)

संपादक

डॉ. आलोक रंजन पांडेय



SAHCHAR.COM 

Posted on May 7, 2017 by admin



संपादकीय- डॉ. आलोक रंजन पांडेय

बातों – बातों में

प्रसिद्ध रंगकर्मी और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व निदेशक देवेन्द्रराज अंकुर से ऋतु रानी की आत्मीय बातचीत

शोधार्थी

गुरु गोविन्द सिंह के काव्य में सांस्कृतिक चेतना – डॉ. ममता सिंगला

बिदेसिया की स्त्री – अर्चना उपाध्याय ✓

भक्ति आंदोलन में अलवर की दयाबाई का महत्व – डॉ. रूपा सिंह

संस्कार में सांस्कृतिक संघर्ष – अमृत कुमार

संत साहित्य और आचार्य परशुराम चतुर्वेदी- कुमारी किरण त्रिपाठी

मोहन राकेश के नाटकों में समय और समाज – राकेश डबरिया

समकालीनता के दौर में हिंदी उपन्यासों में आई चेतना और प्रतिरोध – मनीष कनौजिया

विद्यापति का सौंदर्य वर्णन: विशेष संदर्भ (पदावली) – ललन कुमार

शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में समाज, संस्कृति और इतिहास : डॉ. साधना शर्मा

अनुभूति

नई किरण (कहानी) : डॉ.संतोष खन्ना

साथी थीं तुम (कविता) – शैलेंद्र कुमार सिंह

राजीव नामदेव की दो गज़लें

उसका चेहरा (लघुकथा) – मनोज शर्मा

सुभाष कुमार कामत की कविताएँ

एक कटोरा भरकर (कविता) – नम्रता सिंह

इच्छा (लघुकथा) – ओमप्रकाश क्षत्रिय

मददगार (कविता) – संजय वर्मा "दृष्टि"

कृष्ण सुकुमार की सात कविताएँ

नारी (कविता) – अर्पना सिंह

जरा हट के

छात्र-पॉलिटिक्स – भूपेंद्र भावुक

तर्जुमा

गुजराती कहानी 'सगी माँ' का हिंदी अनुवाद- अनुवादक : डॉ.रजनीकांत एस.शाह

समीक्षा

गुलाम मंडी: किन्नर संवेदना, अस्मिता और अधिकार – पार्वती कुमारी

कोरजा (मेहरूत्रिसा परवेज) : स्त्री जीवन की त्रासदी का आख्यान – आरती

निराला का रचना संसार(लेखिका-डॉ. कुलविन्दर कौर) : डॉ. हरदीप कौर

परंपरा का पुनर्मूल्यांकन (नामवर सिंह)- डॉ. प्रकाशचंद भट्ट

सिनेमा/फैशन

अप्रवासी सिनेमा: रचनात्मक प्रयोगधर्मिता – राकेश दूबे

साहित्य और सिनेमा में किसान – तेजस पुनिया

Posted in अनुक्रमणिका, नौवाँ अंक

बिदेसिया की स्त्री – अर्चना उपाध्याय

बिदेसिया की स्त्री – अर्चना उपाध्याय

Posted on May 7, 2017 by admin



भिखारी ठाकुर रचित 'बिदेसिया' भोजपुरी बोली में लिखा गया लोकप्रिय गीति-नाट्य है। इस कृति की लोकप्रियता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि इसके प्रदर्शन के बाद भिखारी ठाकुर भोजपुरी भाषी क्षेत्रों में 'बिदेसिया' उपनाम से सुविख्यात हो गए। उनकी कृतियों में संस्कृति, संस्कार, सामाजिक समस्या के साथ ही सामाजिक जागरण का संदेश दिया गया है। 'बिदेसिया' में चार प्रमुख पात्र हैं, जिनको लेकर इस सम्पूर्ण नाटक को रचा

गया है। (1) बिदेसी, (2) प्यारी सुन्दरी, (3) बटोही, (4) अन्य स्त्री। नाटक की मूल कथा संक्षेप में इस प्रकार है – बिदेसी (पति) गौना के बाद विदा कराके अपनी पत्नी प्यारी सुन्दरी को घर लाता है। पति-पत्नी अभी दोनों ही गौना के शुभ और रंगीन वस्त्र में हैं। उनके पैर का महावर अभी छूटा भी नहीं है। तभी अचानक बिदेसी को कलकत्ता जाने की धुन सवार हो गई। नई ब्याहता पत्नी के लाख मनुहार करने पर भी बिदेसी पत्नी को तरह-तरह के प्रलोभन देकर गाँव-घर और बिसूरती ब्याहता को छोड़ कर कमाने के लिए शहर चला गया। कलकत्ता में जाकर कुछ रूपया कमाने के बाद बिदेसी शहर के चमक-दमक में अपना घर, अपनी पत्नी सबकुछ भूलकर वहीं का होकर रह गया। बिदेसी वहाँ एक अन्य स्त्री के साथ गृहस्थी बसा लेता है। दूसरी औरत से उसके दो बच्चे भी हैं।

गाँव में प्यारी सुन्दरी पति की प्रतीक्षा में रो-रोकर बेहाल है। एक दिन एक बुजुर्ग बटोही को देख कर प्यारी सुन्दरी उनके गन्तव्य स्थान के विषय में पूछती है। बटोही के द्वारा यह बताने पर कि वह कलकत्ता जा रहे हैं, प्यारी सुन्दरी उनसे अपना सारा दुःख सुनाती है और अपने स्वामी का रूप-रंग बताते हुए बटोही से उनको ढूँढ़ लाने की प्रार्थना करती है। बटोही कलकत्ता जा कर बिदेसी को ढूँढ़ लेते हैं। वे बिदेसी को समझा-बुझाकर घर लौटने के लिए राजी कर देते हैं। बिदेसी दूसरी स्त्री को छोड़ कर अपने घर-गाँव लौट आता है। बिदेसी के गाँव लौटने के पश्चात दूसरी स्त्री भी अपने दोनों बच्चों के साथ बिदेसी के घर का पता पूछते-पूछते पहुँच जाती है। प्यारी सुन्दरी पति को पाकर धन्य हो गई और उपहार-स्वरूप सौत तथा दो बच्चे भी उसकी झोली में डाल दिए गए। इस प्रकार अन्त में पूरा परिवार मिल जाता है। प्रकट में ऐसा प्रतीत होता है कि नाटक सुखान्त है। किन्तु, नाटक पढ़ने के बाद उसके अलिखित और अघोषित प्रश्न मस्तिष्क को मथने लगते हैं। इस पुरुष-प्रधन समाज में क्यों, क्या और कब तक सारी मर्यादा के निर्वाह की जिम्मेदारी स्त्री पर थोपी जाती रहेगी? स्त्री को ही कब तक हर बार त्याग की मूर्ति बनना पड़ेगा? स्त्री-पुरुष सम्बन्ध में स्त्री चाहे पत्नी के रूप में हो अथवा प्रेयसी के रूप में, कब तक छली जाती रहेगी? इस विषय में सबसे पीड़ादायक पहलू है – पुरुष द्वारा छली गई स्त्री को अन्त में समाज द्वारा अपशब्दों से नवाज़ा जाता है (रचनाकार ने दूसरी स्त्री के लिए जो शब्द प्रयुक्त किया है, सभ्य और शिष्ट समाज में वह एक भद्दी गाली है)।

बिदेसी के परदेस चले जाने पर प्यारी सुन्दरी कहती है –

तूरि दिहलन पति-पत्नी नतवा ए सजनी।

हमरा घोटत नइखे कनवाँ भर अनवाँ ए सजनी।

x x x
चाभत होइहे मगही पानवाँ ए सजनी।

पत्नी प्यारी सुन्दरी जो कुछ ही दिन पूर्व ब्याह कर ससुराल आई है, अभी गाँव-घर के कोनों से भी परिचित नहीं हो पाई, पति-पत्नी के रिश्ते की गरिमा और मर्यादा को समझ रही है। बिदेसी के परदेस-गमन के पश्चात वह अकेली ही ससुराल के चौखट के भीतर रहकर अपना दायित्व निभा रही है। बिदेसी पति-पत्नी के पवित्रा बन्धन को तोड़कर अपने तन-मन के सुख में डूबा हुआ है। विरहणी पत्नी दुःख में अन्न का एक कण भी कंठ से नीचे नहीं उतार पा रही है।

पियऊ का बियोग में प्रान छुटि जाई,

हमरे सिरवे बीतत बा, ना दोसरा का बुझाई।

पति के वियोग में पत्नी प्यारी सुन्दरी के प्राण निकलना चाहते हैं। प्यारी सुन्दरी कहती है कि पति-वियोग का यह दुःख जो मेरे ऊपर बीत रहा है उसे कोई दूसरा महसूस नहीं कर सकता। विरह की जिस ज्वाला में प्यारी सुन्दरी जल रही है, उसकी आँच बिदेसी को क्यों नहीं लगती? इतना ही नहीं गाँव के मनचलों से वह अपने सतीत्व को भी बचाती है। गाँव का कथित देवर भाँति-

भाँति के प्रलोभनों के द्वारा प्यारी सुन्दरी को रिझाने का प्रयास करता है –
 भउजी काहे रोवत बाड़ चुप रह भइया परदेस गइलन,
 तू हमरा से रूपया, गर्हना, कपड़ा जे कुछ खोज हम देब।
 यहाँ गाँव के मनचले देवर के रूप में पुरूष की यौवन-लोलुप-दृष्टि दिखाई देती है। इस बहाने से रचनाकार ने सती के सतीत्व को भी परखा है। प्यारी सुन्दरी अपने चारित्रिक दृढ़ता का परिचय देती हुई देवर को दो टूक जवाब देती है –
 प्यारी के मन लागल बाटे जहंवा बाड़न राम।
 माड़ो में सत बंध भइल बा कहत भिखारी हजाम।।
 हिन्दू विवाह की रस्म में विवाह-मण्डप में दुल्हा-दुल्हन अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरे लेते हैं। ये सात फेरे सात जन्मों के बंधन हैं। लेकिन इस सातबंधन में क्या दुल्हन ही बांधी जाती है? दुल्हा सभी बंधनों से मुक्त रखा जाता है? प्यारी सुन्दरी को इस सातबंधन की सुदृढ़ता और पवित्रता का अहसास है। पति की लंबी अनुपस्थिति में भी वह विवाह-मण्डप में लिए गए सात फेरों की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती है। जो बंधन प्यारी सुन्दरी को बांधे रखता है, वही बंधन बिदेसी के लिए अर्थहीन क्यों हो गया?

बटोही के समझाने पर बिदेसी अपने गाँव प्यारी सुन्दरी के पास लौटने के लिए आतुर हो जाता है। दूसरी स्त्री बिदेसी को जाने नहीं देना चाहती क्योंकि अब बिदेसी से ही उसका भी घर-संसार है, दो बच्चे भी हैं। वह बिदेसी से कहती है

पिया पिरतिया लगाई के, दूर देस मत जाहू।

कहे भिखारी भीख मांगि के लाइब, तुम खाहू।

किन्तु, बिदेसी को इस स्त्री का प्रेम और उससे पैदा हुए दो बच्चे भी रोक नहीं पाए। बिदेसी स्वार्थी पति, धूर्त प्रेमी तथा गैर-जिम्मेदार पिता साबित होता है। विवाहित बिदेसी परदेस जाकर, कुछ रूपया-पैसा कमाने के पश्चात अपने इन्द्रिय सुख के लिए दूसरी स्त्री के साथ घर बसा लेता है। रचनाकार जो कि समाज के विचार का प्रतिनिधित्व करता है, पुरूष के उच्छृंखलता को नजरअंदाज करता है और दूसरी स्त्री को बड़ी सहजता से पूरे नाटक में जिस शब्द द्वारा सम्बोधित करता है, वह किसी भी स्त्री के लिए अपमानजनक है। मनचले देवर के माध्यम से प्यारी सुन्दरी के सतीत्व की भी परीक्षा ली गई है अर्थात्, पति की अनुपस्थिति में पत्नी को भी शक के दायरे में रखा गया है। अकेली स्त्री के चरित्र की ठेकेदारी समाज अपने ऊपर ले लेता है। पति (बिदेसी) के घर लौटने पर पत्नी (प्यारी सुंदरी) पति के साथ ही उसकी प्रेयसी और उसके दो बच्चों को सहने के लिए बाध्य है।

भिखारी ठाकुर ने 'बिदेसिया' में ऐसी स्त्रियों के पुनर्संयोजन के लिए मार्ग प्रशस्त किया है, जिन्हें समाज घृणित दृष्टि से देखता है। किन्तु यहाँ प्रश्न दूसरे तरह का है। एक ही घर में दो स्त्रियाँ, एक पुरूष के साथ साँझा करने के लिए लाचार हैं। ऐसी स्थिति में दोनों ही स्त्रियाँ क्या संतुष्ट और खुश रही होंगी? दोनों स्त्रियों की बेचैनी का अंदाज रचनाकार अथवा समाज को क्यों नहीं है? दो स्त्रियों के बीच पुरूष बेदाग और सभी आरोपों से मुक्त है। उसके जीवन में पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्री का होना सहज तथा परिस्थितिजन्य है। 'बिदेसिया' में रचनाकार ने समाज के पुरूष-प्रधान विकृत मानसिकता को स्थापित किया है।

अर्चना उपाध्याय
 एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
 श्याम लाल महाविद्यालय
 दिल्ली विश्वविद्यालय

Posted in नौवाँ अंक, शोधार्थी